B.A. I (प्रथम) Paper-I 01

इकाई = (III) प्राकृत व्याकरण (संधि)

Q-1 संधि किसे कहते हैं? और उसके कितने भेद हैं। वर्णन करें?

Ans- सन्धानं सन्धि: । उत्कृष्टो वर्णानां सन्निकर्ष उच्यते तद्विषयमपि कार्यं समानदीर्घादि सन्धिरित्युच्यते उपचारात्। वर्णानां समवायः सन्धि:।
अर्थात = अर्थ मिलने को सन्धि कहते हैं। जब किसी शब्द में दो वर्ण निकट आने पर मिलते हैं, तो उसके मेल से उत्पन्न होनेवाले विकार को सन्धि कहते हैं।

सन्धि के तीन भेद हैं।
(1) स्वर सन्धि (2) व्यंजन संधि।
(3) अव्यय सन्धि।

(1) स्वर सन्धि → दो अत्यन्त निकट स्वरों के मिलने से जो ध्वनि में विकार उत्पन्न होता है। उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

इसके प्राकृत में पाँच भेद हैं। दीर्घ, गुण, विकृत वृद्धि सन्धि, ह्रस्व-दीर्घ और प्रकृतिभाव।

(1) दीर्घ सन्धि → ह्रस्व या दीर्घ अ, इ और उ से उनका सवर्ण स्वर परे रहे तो दोनों के स्थान में विकल्प से सवर्ण दीर्घ होता है।
जैसे — विसम + आयवो = विसमायवो, विसमआयवो
रमा + आरामो = रमारामो, रमा आरामो
गामणी + ईहासो = गामणीहासो, गामणी ईहासो

(II) गुण सन्धि → अ या आ वर्ण से परे ह्रस्व या

दीर्घ इ और उ वर्ण हो तो पूर्व पर के स्थान में एक गुण आदेश होता है। यथा - वासन+इसी = वासेसी, वास इसी
रामा+इअरी = रामेअरी, ~~सुधार~~ ईसर रामा इअरी
गुढ + अउअर = गुढोअरं, गुढ उअरं
महा + इसि = महेसि, करिअर + उरु = करिअरोरु

(III) विकृतवृद्धि सन्धि → ए और ओ से पहले अ और आ होते उनका लोप हो जाता है।
यथा = णव + एला = णवेला
वण + ओलि = वणोलि
माला + ओहड = मालोहड

(IV) ह्रस्व दीर्घ विधान सन्धि → सामासिक पदों में ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व होता है। इस ह्रस्व या दीर्घ के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है।
यथा - वारि + मई = वारीमई, वारिमई
वेलु + वणं = वेलूवणं वेलुवणं
सिला + खलिअं = सिलखलिअं, सिलाखलिअं

(V) प्रकृतिभाव सन्धि → सन्धि कार्य के न होने को प्रकृतिभाव कहते हैं। इस कि सन्धि के प्रमुख नियम हैं:

(क) इ और उ का विजातीय स्वर के साथ सन्धि कार्य नहीं होता। यथा - पहावलि + अरुणं = पहावलिअरुणं
वि + अ = विअ

(ख) ए और ओ के आगे यदि कोई स्वर वर्ण हो तो सन्धि कार्य नहीं होता है।
यथा वणे + अइइ = वणे अइइ
देवीसि + एत्थ = देवीए एत्थ

(2) व्यंजन संधि → प्राकृत में सन्धि के अधिक नियम नहीं मिलता है।
व्यंजन संधि → व्यंजन वर्ण के साथ व्यंजन य स्वर वर्ण को मिलने से जो विकार होता है उसे व्यंजन संधि कहते है।

जैसे – उस्संघ + आजिर्थ = उसममजिर्थ + आजितम्
प्राकृत के विसर्ग संधि का कोई स्थान नहीं है। क्योंकि विसर्ग के स्थान पर ओ या ए हो जाता है।

(2) व्यंजन संधि के नियम – व्यंजन संधि का विस्तृत प्रयोग नहीं मिलता है। यह प्रायः अन्तिम हलन्त व्यंजन का लोप हो जाता है।
जैसे – अन्तरो – अन्तगओ
अन्त + विस्तम्भ = अन्तवसियो
मनः + शिला = मणोसिला

(3) अव्यय संधि → संस्कृत में इस नाम की कोई संधि नहीं है, पर प्राकृत में अनेक अव्यय पदों में यह सन्धि पायी जाती है। यह सन्धि दो अव्यय पदों में होती है। जैसे – कि + अपि = किपी – केवापि
इसके प्रमुख नियम है।

(I) पद से परे आये हुए आदि अव्यय के अ का लोप विकल्प से होता है। लोप होने के बाद अपि का प यदि स्वर से परे होते है व हो जाता है –
जैसे – केहं + अपि = केहंपि केहमवि
कि + अपि = किंपि, किमवि।

(II) पद के उत्तर में रहनेवाले इति अव्यय के आदि इकार का लोप विकल्प से होता है और स्वर के परे रहनेवाले तकार को द्वित्व होता है।
किं + इति = किति
जं + इति = जंति
पुरिसो + इति = पुरिसोत्ति

(III) त्यद आदि सर्वनामों से पर में रहनेवाले अव्ययों तथा अव्ययों से पर में रहनेवाले त्यदादि के आदि स्वर का विकल्प से लोप होता है जैसे – एस + इमो = एसमो
जइ + एत्थ = जइत्थ

Scanned with CamScanner